International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बाँसवाड़ा जिले में जननांकिकीय परिवर्तन एवं मानव विकास 1991 से 2011 की अवधि के लिये एक आंकलन

डॉ. कल्याणमल सिंगाड़ा
व्याख्याता भूगोल
राजकीय कन्या महाविद्यालय, बूंदी

सार :

बाँसवाड़ा जिले में जनसांख्यिकी परिवर्तन एवं मानव विकास – 1991 से 2011 की अवधि के लिए एक आँकलन शीर्षक वाला यह टर्म पेपर बाँसवाड़ा जिले में 1991 से 2011 के बीच हुये जनसांख्यिकीय परिवर्तन यथा जनसंख्या वृद्धि, लिंगानुपात, साक्षरता आदि में परिवर्तन तथा मानवीय विकास के बीच सम्बन्ध स्थापित करते हुये अध्ययन किया गया है। बासवाड़ा जिला राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित है। इसके उत्तर में प्रतापगढ़, पूर्व में मध्यप्रदेश का रतलाम जिला, दक्षिण में मध्यप्रदेश का झाबुआ जिला व पश्चिम में डूंगरपुर जिले का सागवाड़ा स्थित है। बाँसवाड़ा जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 453612 हेक्टेयर है। बाँसवाडा जिले की जलवायु अन्य जिलों की तुलना में नम व आर्द्र है। यहाँ औसत वर्षा 900 मि. मि. है। यहाँ काली व लाल मिट्टी पायी जाती है। बाँसवाड़ा जिले में प्रचुर मात्रा में खनिज सम्पदा उपलब्ध है। यहाँ का धरातल असमान है क्योंकि यहाँ बहुत–सी पर्वत श्रेणियों व पहाड़ियाँ है।

बाँसवाड़ा जिला का विभाजन 3 उपखण्ड़ों, 5 तहसीलों एवं 8 विकास खण्ड़ों में किया गया है। यहाँ 307 ग्राम पंचायत एवं 1494 राजस्व ग्राम है। बाँसवाड़ा जिले में जनसंख्या सन् 1991 में 1155600 थी जो कि सन् 2011 में बढ़कर 1797485 हो गयी। दशकीय वृद्धि दर सन् 1991 में 30.41 प्रतिशत थी जो 2011 में घटकर 26.51 प्रतिशत हो गयी। अतः हम देखते हैं कि सन् 1991 से 2011 की अवधि में दशकीय वृद्धि दर की दृष्टि से बाँसवाड़ा जिले का

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राजस्थान में चतुर्थ स्थान है। सन् 1991 से सन् 2011 के मध्य में 3.84 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयो है।

मानव विकास एक ऐसी अवधारणा है जिसमें ऐसी परिस्थितियाँ होती है कि सभी नागरिक अपनी प्रतिभा के अनुसार सार्थक एवं सृजनात्मक जीवन जी सके। मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान में भारत का विश्व में 131वाँ स्थान है। मानव विकास की अवधारणा में मानवीय विकास से सम्बन्धित सभी पहलुओं यथा– शिक्षा, स्वास्थ्य, आय पर ध्यान दिया जाता है। मानव विकास सूचकांक (Human Development Index) की गणना निम्न सूत्र की सहायता से की जाती है–

$$HDI = \frac{1}{3}(\text{Health Index}) + \frac{1}{3}(\text{Educaion Index}) = \frac{1}{3}(\text{Income Index})$$

प्रस्तावना

भूगोल विषय की दो शाखाओं मानव भूगोल व भौतिक भूगोल में मानव भूगोल वह शाखा है जिसके अन्तर्गत मानव की उत्पत्ति से लेकर वर्तमान समय तक उसके पर्यावरण के साथ सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। मानव भूगोल की कई उपशाखाओं में से एक जनसंख्या भूगोल है। जनसंख्या भूगोल मानव भूगोल की हाल ही में विकसित एक महत्वपूर्ण शाखा है। भूगोल विषय में पृथ्वी की सतह पर विद्यमान भौतिक व सांस्कृतिक विभिन्नताओं को परस्पर अर्न्तसम्बन्धित करके अध्ययन किया जाता है। जनसंख्या एक ऐसा पहलू है जो पृथ्वी की सतह पर भिन्न है। जनसंख्या भूगोल में जनसंख्या और इसकी विभिन्न विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है जैसे जनसांख्यिकीय गत्यात्मकता और विकास।

जनसंख्या भूगोल पृथ्वी की सतह पर जनसंख्या के वितरण, इसकी विशेषताओं और क्षेत्र के भौगोलिक स्वरूप को अन्तर्सम्बन्धित करके अध्ययन किया जाता है। जनसंख्या का अध्ययन भौगोलिक अध्ययन का एक महत्वपूर्ण बिन्दू है। जनसंख्या सम्बन्धित तथ्यों के बारे में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जानने के लिए भूगोलवेताओं के मन में आरम्भ से ही जिज्ञासा रही है। इस विषय पर भूगोवेत्तओं द्वारा विभिन्न समयों में विभिन्न अध्ययन एंव शोध किये जाते रहै है। जनसांख्यिकीय संक्रमण के लिए जनसंख्या के वितरण एवं वृद्धि, जनसंख्या संरचना, जनसंख्या घनत्व, जनसंख्या प्रवास, ग्रामीण–नगरीय जनसंख्या वितरण एवं जनसंख्या में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है। इन्हीं सभी तथ्यों के आधार पर सम्बन्धित क्षेत्र के संभावित मानव विकास क लिए र्पयास किये जाते है। प्लेंटो एवं अरस्तु ने सर्वप्रथम जनसंख्या सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किये। जनसंख्या विषय पर सर्वप्रथम वैज्ञानिक अध्ययन का सूत्रपात टी.आर. माल्थस द्वारा सन् 1798 में किया गया। सन् 1953 में ट्रिवार्था महोदय ने जनसंख्या अध्ययन सम्बन्धी शोध पत्र प्रस्तुत किया। इसके पश्चात जनसंख्या भूगोल एक क्रमबद्ध विषय के रूप में स्थापित हो गया। हॉल्पटन महोदय ने सन् 1954 में संयुक्त राज्य अमेरिका में जनसंख्या सम्बन्धी अध्ययन किया। इन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका में मानव पारिस्थितिकी के संदर्भ में जनसंख्या सम्बन्धी समस्या का अध्ययन किया।

इसी प्रकार जनसंख्या तथा जनसंख्या संक्रमण के अध्ययन में विभिन्न वैज्ञानिकों तथा भूगोलवेत्ताओं ने लेख व शोध–पत्र प्रस्तुत किये हैं।

जनसंख्या सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं को व्यवस्थित सही व विस्तृत रूप से समझाने के लिए क्लार्क महोदय ने '' पॉपुलेशन ज्योंग्रॉफी '' नामक पुस्तक सन् 1965 में प्रस्तुत की जो सहरानीय है। इसी क्रम में गार्नियर महोदय, जैलिंस्की महोदय ने भी जनसंख्या सम्बन्धी अध्ययन किए। जनसांख्यिकीय संक्रमण सम्बन्धी अनेक मॉडल समय–समय पर प्रस्तुत किय गये जिनका उपयोग अनुसंधान के अध्ययन के लिए एक मॉडल को तैयार करने में किया जाता है। इन मॉडलों में थॉम्पसन (1929) तथा नोटेस्टीन (1945) का जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस मॉडल के माध्यम से थॉम्पसन व नोटेस्टीन महोदय ने सम्पूर्ण विश्व में जनसंख्या परिवर्तन की विभिन्न अवस्थाओं को समझाने का प्रयास किया गया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अतः इन सब अध्ययनों के माध्यम से बांसवाड़ा जिले में सन् 1991 से सन् 2011 की अवधि के मध्य हुये जनसांख्यिकिकीय परिवर्तन यथा जनसंख्या वृद्धि, लिंगानुपात प्रवृत्ति, साक्षरता की प्रवृत्ति आदि तथा इसी अवधि के मध्य हुये मानव–विकास की प्रवृत्ति को अन्तर्सम्बन्धित करते हुये एक आकंलनात्मक अध्ययन कर पायेंगें। जनसांख्यिकीय परिवर्तन यहां के संसाधन यथा– खनिज, मृदा, वन, जल तथा अन्य कारकों का अध्ययन कर बांसवाड़ा जिले के सम्भावित विकास की योजना के अवरोधात्मक कारकों का पता लगा पायेंगे। बांसवाड़ा जिले के आधे भाग में माही डेम द्वारा सिंचाई की सुविधा प्राप्त है। इन सब के बावजूद बांसवाड़ा जिले में कृषि की वैज्ञानिक पद्धतियों को न अपनाने के कारण यहां पैदावार अच्छी नहीं हो पाती है। यहां स्वास्थ्य सुविधाओं का भी अभाव है तथा शिक्षा का स्तर भी अच्छा न होने के कारण बांववाड़ा जिला का मानव विकास में राज्य स्तर पर 31वाँ स्थान है। अतः बांसवाड़ा जिला मानव विकास की दृष्टि से पिछड़ा हुआ जिला है।

अध्ययन की प्रासांगिकता :–

सन् 1991 में विश्व की जनसंख्या 5.3 बिलियन थी जो सन् 2011 में बढकर 7 बिलियन हो गई है। भारत में सन् 1991 में कुल जनसंख्या 84.64 करोड़ थी जो सन 2011 में बढ़कर 121.08 करोड़ हो गयी। बांसवाडा जिले की जनसंख्या 1155600 थी जो 2011 में बढ़कर 1797485 हो गयी। इस प्रकार विश्व के कई लोकप्रिय देशों में जनसंख्या विस्फोट एक गम्भीर समस्या है। भारत जैसे आर्थिक रूप से पिछड़े देश में जनसंख्या से सम्बन्धित समस्याओं के अध्ययन करने की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। जनसंख्या की विशेषताएं क्षेत्रीय स्तर पर भिन्न होती है। जनसंख्या के अध्ययन से सम्बन्धित समस्याओं को बेहतर तरीके से समझने के लिए क्षेत्रोय स्तर पर भी जनसंख्या का अध्ययन करना आवश्यक है। इसलिए बांसवाड़ा जिले को अध्ययन के लिए चुना गया है। ''बांसवाड़ा जिले में जननांकिकीय परिवर्तन एवं मानव विकास : 1991 से 2011 की अवधि के लिए एक आंकलन'' शीर्षक से वर्तमान कार्य अध्ययन के लिए लिया गया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अध्ययन का उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य बांसवाड़ा जिले में जनसंख्या की विभिन्न जनसांख्यिकीय विशेषताओं तक पंहुच बनाना है।

- बांसवाड़ा जिले में जनसंख्या के वितरणा और घनत्व का विश्लेषण करना।
- क्षेत्र की भौगोलिक और सांस्कृतिक विशेषताओं का अध्ययन करना।
- क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि और जनसंख्या में विद्यमान भिन्नता का परीक्षण करना।
- बांसवाड़ा जिले की जनसंख्या के लिंग व आयु संरचना का अध्ययन करना
- बांसवाड़ा जिले में जनसंख्या की साक्षरता व व्यावसायिक संरचना का अध्ययन करना।
- अध्ययन क्षेत्र में शहरीकरण के अनुपात का पता लगाना।

प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता :–

बांसवाड़ा जिला राज्य के दक्षिणी भाग में 23 डिग्री 11′ से 23 डिग्री 56′ उत्तरी अक्षांश व 73 डिग्री 58′ से 74 डिग्री 47′ पश्चिमी देशान्तर के मध्य स्थित है। बांसवाड़ा जिला उदयपुर सभाग के अन्तर्गत आता है। प्रशासनिक उद्देश्य से जिले का विभाजन 3 उपखण्ड़ों, 5 तहसीलों एवं 8 विकास खण्डों में किया गया है। यहां 307 ग्राम पंचायत एवं 1494 राजस्व ग्राम है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भू–उपयोग एवं कृषि :–

जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 453612 हैक्टेयर है। भूमि उपयोग का विवरण निम्नानुसार है:–

क्र.स.	भूमि उपयोग का वर्गीकरण	क्षेत्रफल (हैक्टर में)	प्रतिशत क्षेत्रफल
1.	जंगलात	91200	20.11
2.	कृषि अयोग्य	62947	13.88
3.	स्थायी चारागाह व अन्य गोचर	11968	2.64
4.	वृक्षों के झुंड तथा बाग	115	0.03
5.	कृषि योग्य पड़त व बंजर भूमि	64012	14.11
6.	दुपज क्षेत्रफल	93094	20.52
7.	वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल	223370	49.24
8.	समस्त बोया गया क्षेत्रफल	316464	69.77

स्त्रोत :– क्लेक्टर भू–अभिलेख बांसवाड़ा वर्ष 2008–09

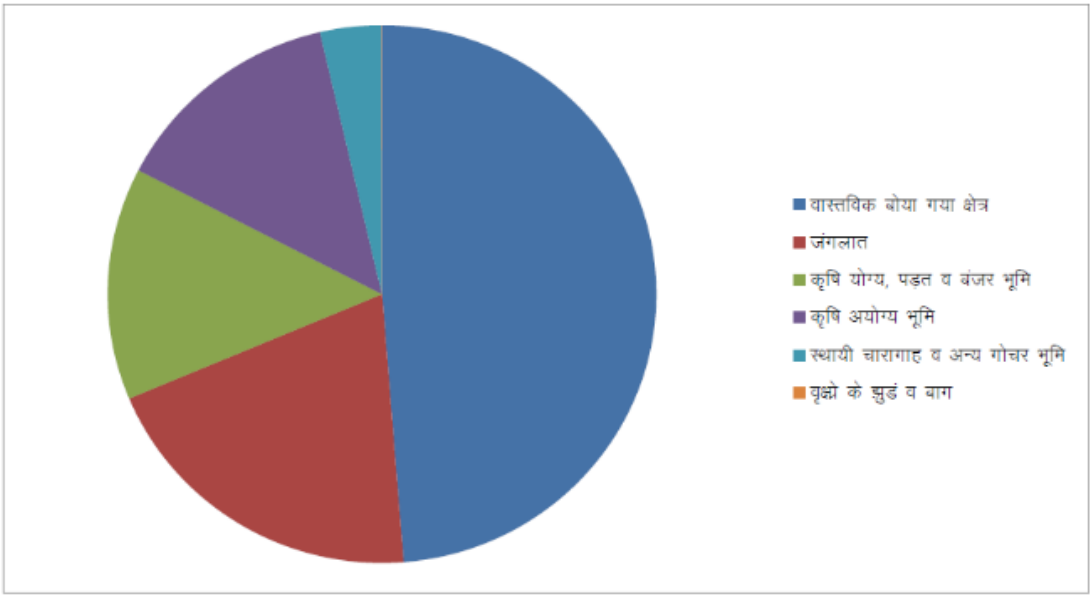

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि बांसवाड़ा जिले का आर्थिक आधार कृषि व बन क्षेत्र है। कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में से 59.51 प्रतिशत कृषि एवं 20.10 प्रतिशत क्षेत्र वनों के अन्तर्गत आता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मृदा वर्गीकरण :–

जिले के अधिकांश भाग में काली एवं लाल मिट्टी है। उत्पादन की गुणवत्ता व भू–सर्वेक्षण के आधार पर बांसवाड़ा जिले की मिट्टी को स्थानीय गांवों के नाम से विभिन्न 9 वर्गों में विभाजित किया गया है। जो निम्नानुसार है:–

1.ठीकरिया मृदा 2. पलोदरा मृदा 3. हैजामल मृदा

4. सज्जनगढ़ मृदा 5. डूंगरा मृदा 6. भूराकुंआ मृदा

7. दानपुर मृदा 8. आनन्दपुरी मृदा 9. कोटड़ा मृदा

- ठीकरिया मृदा :– यह मृदा अधिक गहरी होती है। चूना रहित होती है व इसमें जल निकास की सुविधा भी अच्छी होती है। यह मृदा सभीुसलों के लिए उपयुक्त है।
- पलोदरा :– यह मृदा गहरी लाल, महीन गठन जल निकास की सुविधा बेहतर चूने की अधिकता तथा ढलान पर स्थित होती है। सभीुसलों के लिए उपयुक्त है।
- हेजामल मृदा यह मृदा गहरी लाल, भूरी होती है। चूना रहित व जल निकास साधारण होता है। मक्का, दाल, चना, सरसों के लिए उपयुक्त।
- सज्जनगढ़ मृदा :– यह मृदा गहरी लाल, भूरी व मध्यम गठन वाली होती है। यह चूना रहित, साधारण जल निकास व मामूली ढलान पर स्थित होती है। कपास, मक्का व दालें, गेहूँ चना के लिए उपयुक्त।
- डुंगरा मृदा :– यह मृदा गहरी पीली भूरी व मध्यम गठन वाली, चूना रहित होती है। इस मृदा में जल निकास अच्छा व ढलान कम होता है। सभीुसलों के लिए उपयुक्त।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

- भूरा कुंआ मृदा :– यह मृदा मध्यम गहरी, गहरी भूरी एवं काली तथा महीन गठन वाली होती है। इस मृदा में कम जल निकास, चूना रहित व मध्यम ढलान होता है। धान, मक्का, गन्ना, गेहँ व चना के लिए उपयुक्त।

- दानपुर मृदा :– यह मृदा अधिक गहरी भूरी एवं काली होती है। यह चूना रहित, कम जल निकास व मामूली ढलान वाली होती है। धान, मक्का, कपास, गेहूँ के लिए उपयुक्त।

- आनन्दपुरी मृदा :– यह मृदा कम गहरी पीली एवं गहरी भूरी तथा मध्यम गठन वाली होती है। इसमें जल निकास बेहतर होता है, कंकड़ पत्थर युक्त मध्यम ढलान वाली होती है। मक्का, कपास, खरीफ दालों के लिए उपयुक्त होती है।

- कोटड़ा मृदा :– यह मृदा मध्यम गहरी, भूरे रंग की होती है। इसमें जल निकास अच्छा होता है। चूना रहित व मध्यम ढलान वाली कंकड़ पत्थर युक्त होती है। यह मक्का, खरीफ, दालें व चने के लिए उपयुक्त है।

कृषि :–

सन् 2011 की जनसंख्या के अनुसार बांसवाड़ा जिले के 81.40 प्रतिशत लोग कृषि एवं कृषि से सम्बन्धित क्रियाकलापों में लगे हुये है। जिले में जोतों का आकार छोटा होने एवं भूमि के बंटे बिखरे हुए होने के कारण एव कृषि की वैज्ञानिक पद्धतियों के अभाव के कारण कृषि उत्पादन में अपेक्षित वृद्धि नहीं हो पाती है। माही बांध के निर्माण के पश्चात् सिंचाई की सुविधाओं की उपलब्धता के कारण कृषकों में कृषि व्यवसाय के लिए पर्याप्त रूचि पैदा हुई है तथा उत्पादन में वृद्धि दर्ज की गई है।

वर्षा की स्थितिः–

बांसवाड़ा जिले की जलवायु नम व आर्द्र है। जिले का अधिकतम् तापमान 45 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 10 डिगी सेल्सियस ओर औसत तापमान 26 डिर्गी सेल्सियस

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रहता है। जिले की औसत वार्षिक वर्षा 930 मि.मि है। बांसवाड़ा जिला राज्य के सवाधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में से एक होने के कारण इसे राजस्थान का चेरापुंजी कहा जाता है।

पशुधन संपदाः–

जिले की लगभग 90 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है। ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि तथा कृषि के साथ ही पशुपालन है जो कि कृषकों द्वारा ही किया जाता है। पशुपालन एवं मुर्गीपालन आदिवासी परिवारों का पारम्परिक व्यवसाय है जो उनकी आजीविका का मुख्य स्त्रोत है। जिले का पशुपालन बहुत ही दुर्बल एवं अस्वस्थ है जिस कारण दुग्ध एवं अन्य उत्पादन भी अत्यन्त कम ही प्राप्त होते है। वर्तमान में पशुधन में गुणात्मक सुधार एवं पशुपालन चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार किया जाना वांछनीय है।

वन–सम्पदाः–

बांसवाड़ा जिले में 20 प्रतिशत से भी अधिक क्षेत्र वनों के अन्तर्गत है परन्तु उसमें से केवल 30 र्पतिशत क्षेत्र मे ही घने वन है जबकि राष्ट्रीय स्तर पर कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 30 प्रतिशत भू–भाग पर वन है। इस दृष्टि से बांसवाड़ा जिले की स्थिति ठीक नहीं है। यहां पर वन क्षेत्र का विकास किया जाना अपेक्षित है क्योंकि वन आदिवासियों के जीवन निर्वाह का मुख्य आधार है।

मुख्य वृक्ष :–

बांस, तेन्दु के पत्ते, गोंद, शहद आंवला आदि।

मत्स्य :–

माही बांध एवं कड़ाना बांध तथा अन्य 540 से अधिक छोटे बड़े तालाब है जिनमें वर्ष के अधिकांश महिनों में पानी भरा रहता है। अतः यहां र्पचूर मात्रा में जलराशि उपलब्ध होने के कारण मत्स्य पालन की र्पचूर संभावना है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जल सम्पदा :–

वर्ष सन् 1982–83 तक बांसवाड़ा जिले में सिंचाई के मुख्य साधन कुएँ व तालाब ही थे जो अत्यन्त सीमित क्षेत्र के लिये थे। माही बांध के निर्माण के पश्चात वर्तमान में नहरें सिंचाई का मुख्य स्त्रोत बन गई है। जिले की आठ पंचायत समितियों में से चार नॉन कमाण्ड क्षेत्र (माही कमाण्ड क्षेत्र से बाहर) कुशलगढ., पीपलखूंट, सज्जनगढ़ तथा आनन्दपुरी में अभी भी सिचांई सुविधाओं (नहरों) का अभाव है तथा आने वाले वर्षो में भी इन क्षेत्रों को लघु सिंचाई स्त्रोतों पर ही निर्भर रहना होगा। माही नदी बांसवाड़ा जिले की मुख्य नदी है जा समूचे जिले की प्राकृतिक सीमा बनाती है। माही नदी पर बांध निर्मित होने के पश्चात् यह बासंवाड़ा के लिये वरदान साबित हुई है। अनास, हिरण चाप आदि माही की सहायक नदियाँ है।

साधनों के अनुसार कुल सिंचित क्षेत्रफल का विवरण वर्ष 2008–09 निम्नानुसार है :–

क्र.स..	साधन	कुल सिंचित क्षेत्रफल	प्रतिशत
1	नहरों से	56256	65.89
2	तालाबों से	1732	2.03
3	कुओं से	12752	14.94
4	नलकूप से	3307	3.87
5	अन्य साधनों से	11334	13.27
योग		**85381**	

स्त्रोत :– कलेक्टर भू–अभिलेख बांसवाड़ा

बांसवाड़ा जिले की 92.9 र्पतिशत जनसंख्या ग्रामीण एवं 7.1 र्पतिशत जनसंख्या नगरीय है। यहां पर लिंगानुपात 980 है जो कि राज्य के लिंगानुपात 928 से बहुत ज्यादा है। बांसवाड़ा जिले की साक्षरता दर 56.3 प्रतिशत के साथ राज्य में 30वाँ स्थान है। बांसवाड़ा जिले की कार्य भागीदारी दर ( ) 51.0 प्रतिशत दर्ज की गई है और कार्य भागीदारी में लिंग अंतर 4.3 प्रतिशत अंक है। बांसवाड़ा जिले में श्रमिकों के बीच काश्तकारों खेतिहर मजदुरों,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

घरेलु उद्योगों में श्रमिकों ओर अन्य श्रमिकों (श्रमिकों की श्रेणी) का प्रतिशत क्रमशः 59.6, 21.8, 2.2 ओर 16.5 प्रतिशत है।

जनसंख्या :–

बांसवाड़ा जिले में सन् 1981 से लगातार जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर में गिरावट दर्ज की जा रही है परन्तु गिरावट की दर कम होने की वजह से जनसंख्या वृद्धि राज्य के अन्य जिलों की तुलना में अधिक है। सन् 1991 में कुल जनसंख्या 1155600 थी जो सन् 2001 में बढ़कर 1501589 हो गयी। सन् 2011 में जनसंख्या बढ़कर 1797485 हो गयी अतः हम देखते है कि बांसवाड़ा जिले की जनसंख्या लगातार बढ़ती जा रही है लेकिन इसी प्रकार जिले की दशकीय वृद्धि दर सन् 1991 में 30.34 प्रतिशत, 2001 में 29.94 प्रतिशत तथा सन् 2011 में घटकर 26.50 प्रतिशत रह गई है। अतः दशकीय वृद्धि दर में भी गिरावट आ रही है लेकिन गिरावट की दर कम है।

राजस्थान की दशकीय वृद्धि दर 21.30 प्रतिशत है जो कि बांसवाड़ा की दशकीय वृद्धि दर 26.51 प्रतिशत से काफी कम है।

अनुसूचित जाति एवं जनजाति जनसंख्या :–

बांसवाड़ा जिला जनजाति बहुल क्षेत्र है जिसमें मुख्यतः भील, डामोर, मीणा, गरासिया जनजाति के लोग निवास करते है। बांसवाड़ा में अनुसूचित जनजाति का कुल जनसंख्या 76. 38 प्रतिशत तथा अनुसूचित जाति का प्रतिशत 4.46 प्रतिशत है। अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या सन् 1991 में 849050, सन् 2001 में 101359 तथा सन् 2011 में 1372,999 हो गयी।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इसी प्रकार अनुसूचित जाति की जनसंख्या सन् 1991 में 57813, सन् 2001 में 61733 तथा सन् 2011 में 80091 हो गई। अतः अनुसूचित जाति व जनजाति की जनसंख्या में भी वृद्धि दर्ज की गई है।

लिंगानुपात :–

प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या का अनुपात लिंगानुपात कहलाता है। बासंवाड ा जिले का लिंगानुपात राज्य के लिंगानुपात के काफी बेहतर है। बांसवाड़ा जिले का लिंगानुपात सन् 1991 में 969, सन् 2001 में 974 तथा सन् 2011 में बढ़कर 980 हो गया।

बांसवाड़ा जिले का लिंगानुपात सन् 1991–2011 तक :–

S.no.	Census year	Rural	Urban	Total
1.	1991	974	918	969
2.	2001	978	932	974
3.	2011	981	964	980

स्त्रोत :– जनगणना 1991 से 2011

साक्षरता :–

सात वर्ष ओर उससे अधिक आयु का व्यक्ति जो किसी भी भाषा में समझ के साथ पढ और लिख सकता है, साक्षर माना जाता है। जो व्यक्ति पढ़ सकता है लेकिन लिख नहीं सकता वह साक्षर नहीं है। यह आवश्यक नही हैं कि साक्षर माने जाने वाले व्यक्ति ने कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त की हो या कोई न्यूनतम शैक्षिक मानक उत्तीर्ण किया हो।

साक्षरता दर :–

जनसंख्या की साक्षरता दर को 7 वर्ष ओर उससे अधिक आयु वर्ग में साक्षरों के प्रतिशत के रूप में परिभाषित किया गया है। विभिन्न के रूप में परिभाषित किया गया है। विभिन्न आयु समूहों के लिए उस आयु समूह में साक्षरों का प्रतिशत साक्षरता दर कहलाती है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जनगणना सन् 1991 के अनुसार बांसवाड़ा जिले की साक्षरता 26.00 प्रतिशत थी जिसमें से महिला साक्षरता 13.42 प्रतिशत तथा पुरूष साक्षरता 38.16 प्रतिशत है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल साक्षरता 44.63 प्रतिशत थी जिसमें से महिला साक्षरता 28.43 प्रतिशत तथा पुरूष साक्षरता 60.45 प्रतिशत थी। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल साक्षरता 56.33 प्रतिशत थी जिसमें से महिला साक्षरता 43.06 प्रतिशत तथा पुरूष साक्षरता 69.48 प्रतिशत थी।

अतः बांसवाड़ा जिले की साक्षरता में लगातार सुधार हो रहा है परन्तु राज्य की साक्षरता (66.10 पतिशत) से अब भी बहुत कम है।

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार बांसवाड़ा का राजस्थान में 30वाँ स्थान है।

स्वास्थ्य :–

बांसवाड़ा जिले में शिशु मृत्यु दर 53.43 प्रतिशत है तथा अशोधित जन्त दर 25.54 प्रतिशत है। बांसवाड़ा में जीवन प्रत्याशा 63.25 प्रतिशत है। जिले में कुल जन्म दर 3.22 है।

मानव विकास सूचकांक में बांसवाड़ा जिले का स्वास्थ्य सूचक की दृष्टि से 0.425 सूचकांक के साथ 31वाँ स्थान है।

मानव विकास सूचकांक में बांसवाड़ा के स्वास्थ्य सम्बन्धी महत्वपूर्ण सूचकों का विवरण :–

Human Development Index (HDI)	Rank Raj HDI	IMR	Life expectancy at Birth year	CBR	CPR	Total Firtility Rate
0.425	31	28	11	7	18	3

जनघनत्व :–

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बांसवाड़ा जिले का जनघनत्व राज्य औसत घनत्व से अधिक रहा है। जिले का जनघनत्व सन् 1991 में 229, सन् 2001 में 298 तथा सन् 2011 में 397 हो गयां अतः राज्य के जनघनत्व 200 से जिले का जनघनत्व लगभग दुगुना है। बांसवाड़ा जिले के जनघनत्व में सन् 1991 से लगातार वृद्धि देखी जा रही है।

प्रति व्यक्ति आय :–

बांसवाड़ा जिले की प्रति व्यक्ति आय सन् 2001–02 में 9681 थी जो सन् 2011 में बढ़कर 36465 हो गयी। बांसवाड़ा जिले की प्रति व्यक्ति आय राज्य की प्रति व्यक्ति आय से अत्यधिक कम है। बांसवाड़ा जिला प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से 2020–21 (71800) में राजस्थान में 32वाँ स्थान रखता है। मानव विकास सूचकांक में बांसवाड़ा जिले का राज्य में प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से 29वाँ स्थान है।

निष्कर्ष :–

इस टर्म पेपर में बांसवाड़ा जिले में जननांकिकीय परिवर्तन एवं मानव विकास के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया ह। बांसवाड़ा जिला मानव विकास की दृष्टि से राज्य में पिछड़ा हुआ है। बांसवाड़ा जिला में शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाओं का विकास कम होने के कारण भी बांसवाड़ा जिला मानव विकास की द ृष्टि से विछड़ा हुआ है। बांसवाड़ा जिले में साक्षरता दर भी बहुत कम है। यहां की अधिकतर जनसंख्या कृषि कार्यो में लगी हुयी है।

कृषि के साथ–साथ पशुपालन ही इनका प्रमुख व्यवसाय है। कृषि की वैज्ञानिक पद्धतियों के अभाव एवं पशुपालन के अस्वस्थ तरीके तथा स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव के कारण ये लोग इस व्यवसाय में मुश्किल से जीवोकोपार्जन ही कर पाते है। बांसवाड़ा के पिछड़े होने का एक प्रमुख कारण यहां परिवहन जाल का अभाव है जिसके कारण यहां उद्योगों का विकास नही हो पाया है। शिक्षा का स्तर निम्न, स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव, जीवन शैली का निम्न स्तर है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इसके साथ ही इस क्षेत्र के पिछड़ा होने के प्रमुख कारणों में से एक कारण हम यह भी मान सकते है कि यह क्षेत्र परिहन सुगमता के अभाव के कारण अपने आस–पास स्थित क्षेत्रों से नवाचारों को नही अपना पाया है। बांसवाड़ा शिक्षा की दृष्टि से भी एक पिछड़ा क्षेत्र है। यहां महिला साक्षरता व पुरूष साक्षरता दोनों ही निम्न ह। अतः साक्षरता अभाव के कारण भी यह क्षेत्र अविकसित बना रहा है।

बासंवाड़ा जिला मानव विकास की दृष्टि से पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। इसका प्रमुख कारण यहां शिक्षा का अभाव, स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव, तथा प्रति व्यक्ति आय की कमी है। बांसवड़ा जिले में जन्त दर व मृत्यू दर अधिक है। जन्म दर व मृत्यू दर की अधिकता के कारण भी यह क्षेत्र विकसित नही हो पाया है।

थॉम्पसन व नोटेस्टीन के जननांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त के अनुसार जन्म दर व मृत्यू दर अधिक होने पर वह क्षेत्र अविकसित रहता है। जेसे–जैसे जन्म दर व मृत्यू दर में कमी आती जाती है उस क्षेत्र का विकास का स्तरर बढ़ता जाता है। मॉल्थस मार्क्स ने भी यही बताया है कि जनसंख्या में वृद्धि होने पर बेरोजगारी व भूखमरी बढ़ती जाती है।

अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त के अनुसार भी संसाधनों जितनी जनसंख्या का भरण–पोषण संसाधन जितनी जनसंख्या का भरण–पोषण कर सकते है उतनी जनसंख्या होने पर ही क्षेत्र विशेष का विकास हो सकता है। अतः हम यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि जननांकिकीय कारक व मानव विकास एक –दूसरे से अन्तर्सम्बन्धित होते है।

संदर्भ ग्रंथ–सूची :–

- ***Beaujeu Garnier*** *(1971) : "Explanation in Geography" , Longman Publication London.*
- ***Chandana, R.C.*** *(2007) : "Geography of Pupulation: Concepts , Determinantsand Patterns", Kalyani Publishers, New Delhi.*
- ***Chandra,s.*** *(1991) : "Population Patternandsocial Changes in India", Chugh Publications, allahabad.*

- ***Chandana, R.C.*** *(2008) : "Geography of Pupulation", Kalyani Publishers, New Delhi.* ***Trewarta G.T.*** *(1969) : "Geography of – population:world pattern " , Johnwileyandsons, New York.* ***Chopra, G.*** *(2006) : "Population Geography", commonwealth Publishers, New Delhi.*
- ***Singh Narendra*** *(2020) : "Population- Environmentand development issues-a casestudy ofsikar district Rajasthan.*
- ***Agarwals. N.*** *(1973) : "India's Population" Tata Mc. Graw Hill, New Delhi.*
- ***Chaudhary, M.*** *(2012) : "Human Geography", Globalacademic Publishersand Distributers, New Delhi.*
- ***Government Publications :-***
- ***Census of India*** *(1971) : "District Census Handbook of Banswara", Published by the director of Census operations Govt. printing press Rajasthan.*
- ***Census of India*** *(1981) : "District Census Handbook of Banswara", Published by the director of Census operations Govt. printing press Rajasthan.*
- ***Census of India*** *(1991) : "District Census Handbook of Banswara", Published by the director of Census operations Govt. printing press Rajasthan.*
- ***Census of India*** *(2001) : "District Census Handbook of Banswara", Published by the director of Census operations Govt. printing press Rajasthan.*
- ***Census of India*** *(2011) : "District Census Handbook of Banswara", Published by the director of Census operations Govt. printing press Rajasthan.*
- ***Gazetteers, Districtseriessikar District -***
- ***Government of Rajasthan*** *: "Socio-economicabstract of Banswara District", Directorate, of economicsandstatistics, Rajasthanstate.*
- *Socio-Economic Reviewand Districtstatisticalabstract Banswara District Government of Rajasthan.*